आदिम जनजाति कोरवा का समेकित अध्ययन
सिमडेगा जिला के संदर्भ में

मानव विज्ञान ,सामाजिक विज्ञान में पी0 एच0 डी0 पंजीकरण हेतु एक प्रस्तावित शोध प्रारूप

स्नातकोतर मानव विज्ञान विभाग
सामाजिक विज्ञान संकाय
रांची विश्वविद्यालय, रांची

शोध निर्देशक

डॉ. राम कुमार प्रसाद
सहायक प्राध्यापक
सह
विभागाध्यक्ष
मानव विज्ञान विभाग
सिमडेगा महाविद्यालय
रांची विश्वविद्यालय, रांची।

शोधार्थी

Rose Minj

रोस मिंज
मानव विज्ञान विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची।

स्नातकोतर मानव विज्ञान विभाग रांची विश्वविद्यालय, राँची।
राँची झारखण्ड–834011
2023

आदिम जन–जाति कोरवा का समेकित अध्ययन

सिमडेगा जिला के संदर्भ में

अनेकता में एकता हों भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। इस अनेकता का तात्पर्य भारत के भौगोलिक सीमा क्षेत्र के अंतर्गत की तमाम उन तत्त्वों से है जो भारत को संपूर्णविश्व पहल पर अपनी समृद्धि एवं प्रभावशाली संस्कृति को परिलक्षित करता है। ये अनेकता हमे न सिर्फ मौ0 आधार पर देखने को मिलता है, यह विविधता हमें यहां निवास करने वाले मानवों में भी देखने को मिलता है। भारत के विभिन्न प्रदेशों में निवासित जनजातियाँ भारतीय संस्कृति को एक विशिष्ट संस्कृति का रूप देकर अनेकता में एकता की परिकल्पना को परिपुष्ट करता है।

सर्वाधिक जनसंख्या के दृष्टिकोण से देखें के तो अफ्रीका के पश्चात् भारत में जन–जातियों की संख्या अधिक है। भारत वर्ष में कुल 705 जन–जातियाँ अधिसूचित की गई है जिनकी जनसंख्या लगभग 10.5 करोड़ है। जो भारत की कुल जनसंख्या का 8.6: है। भारत की इन 705 जन–जातियों में 74 जन–जातियाँ आदिम जन–जाति की श्रेणी में रखे गए है। भारत की सबसे बड़ी जन–जाति भील है, जिनकी जनसंख्या 4618068 है जो कुल जन–जातिय जनसंख्या का 37.7 % है। भारत की दुसरी सबसे बडी जन–जाति गोण्ड है जिनकी जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 4357918 है जो कुल जन–जातिय जनसंख्या का 35.6 % है।

झारखण्ड में कुल 32 जन–जातियाँ अधिसूचित किए गए हैं। जो झारखण्ड की कुल जनसंख्या का 26.3 % है। इनमे से 08 जन–जातियों को आदिम जन–जातियों की श्रेणी में रखा गया है, यथा – असुर, विरहोर, मालेर, माल, पहाडि़या, सौरिया, कोरवा, विरजिया सम्मिलित हैं। इनमें कुछ आदिम जन–जातियों की सामाजिक, शैक्षणिक एंव आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आ रहा है, परन्तु विरहोर एंव कोरवा में अपेक्षित परिवर्तन नहीं हो पाया है।

आदिम जन–जाति कोरवा जिनका निवास स्थान मुख्य रूप से छतीसगढ़ के विलासपुर, रायगढ़, जशपुर, सुरगूजा जिला, तथा झारखण्ड के पलामू एंव सिमडेगा जिला तथा उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर जिले है। इनकी आबादी का अधिकांशः भाग छत्तीसगढ़ में निवाश करता है इस जनजाति के लोग अपनी उत्पति भी जशपुर के खुड़िया क्षेत्र को मानते हैं। रायगढ़ एंव जशपुर जिले के 78 गाँवों तथा सरगुजा के 182 गाँवों में इस जनजाति के लोगों की सघन आबादी है।

झारखण्ड में कोरवा पलामू , लातेहार , हजारीबाग, संथाल परगना एंव सिमडेगा जिला में पाए जाते है। मुख्य रूप से सिमडेगा तथा पलामू जिला के वे क्षेत्र जो छत्तीसगढ़ के सीमा से सटे हैं वहाँ इनकी जनसंख्या अधिक है। सिमडेगा (झारखण्ड) जिला, छत्तीसगढ़ के जशपूर जिला से सटा हुआ है अतः कुरडेग प्रखंड के पहाड़ी पटरिया जो छत्तीसगढ़ एंव झारखण्ड की सीमा पर अवस्थित है वहाँ कोरवा जनजाति का निवाश है। कुरडेग प्रखंड में इनकी जनसंख्या 611 है। इस क्षेत्र में मुख्य रूप से कुटमाकच्छार, बडकीबिउरा, गडियाजोर, खिण्डा, चड़रीमुण्डा, इत्यादि राजस्व ग्राम में इनका निवास है।

Rose Minj

कुटमाकच्छार राजस्व ग्राम के अर्न्तगत मुड़ाम्बा, झीमरी, डबनीपानी, खेरपानी के क्षेत्र आते हैं।

- बड़कीबिउरा राजस्वग्राम के अर्न्तगत रावणखोता, सरईपानी, डोंगापानी, उरूमकेला, गुरूमकेला, के पहाडी भाग आते हैं।
- गढ़ियाजोर राजस्व ग्राम के अर्न्तगत कालोमुण्डा तथा भलमुण्डा आते हैं।
- खिण्डा के अर्न्तगत परतापुर तथा चड़रीमुण्डा के अर्न्तगत टांगरटोली टोला सम्मिलित हैं।
- कुटमकच्छार का गुड़मम्बा तथा झीमरी एंव बडकीबिउरा का रावणखोता एंव सरईपानी की पहाड़ी पर इनकी आवादी अधिक है।
    - मुड़म्मबा में 23 परिवार जिनमे 39 पुरूष तथा 47 महिलाएँ हैं।
    - झीमरी में 16 परिवार जिनमे 23 पुरूष एंव 17 महिलाएँ हैं।
    - बड़कीबिउरा राजस्वग्राम के अर्न्तगत सरईपानी में 04 परिवार में 7 पुरूष एंव 7 महिलाएँ हैं।
    - इसी प्रकार रावणखोता में 10 परिवारों में 27 पुरूष एंव 20 महिलाएँ हैं।

आदिम जनजाति कोरवा मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं :–

(1) डिहारी कोरवा – समतल भुमि पर अन्य सामुदायों के साथ निवास करते हैं।
(2) पहाड़ी कोरवा – पहाड़ी पटरियों या तराई क्षेत्रों में निवास करते हैं।

पुनः डिहारी कोरवा को सामाजिक स्तरीकरण के आधार पर तीन खंडो में वर्गीकृत किया गया है :–

(अ) देवनिहार – कृषि कार्य करते हैं और सामाजिक स्तरीकरण में उच्च स्थान प्राप्त करते हैं।

(ब) नरटोडवा या धनुहार – बच्चे के जन्म के उपरान्त नाभी स्वंय काटते हैं।

(स) मांझी – अन्य जनजातियों के तरह समतल भुमि पर कृषि करते हैं।

अन्य जन–जातियों की तरह कोरवा भी पृथकतावादी जीवन व्यतीत करते हैं साथ ही यह प्रकृतिवादी हैं। प्राकृतिक चीजों को अपना पूर्वज मानते हैं। इनके पाँच गोत्र होते हैं।

1) हेजडा – बाँस

2) इदिगवार एडगे – कयमी लत्तर

3) समट – एक पेड

2

Rose Minj

4) मुडियार – कुत्ता का सिर

5) गीनूम – मिट्टी का बना मॉडल

ये गोत्र विवाही नहीं होते हैं। परिवार एकाकी होते हैं। पति पत्नी एंव अविवाहित बच्चे एक साथ रहते हैं। अपवाद स्वरूप विवाहित लड़के पिता के घर में रहते हैं परिवार पितृवंशीय, पितृसतात्मक और पितृस्थानीय है परंतु माँ का विशेष स्थान नहीं होता है। जाति में लड़की स्थान उच्च होता है। विवाह के लिए लड़के वाले स्वंय लड़की के घर जाते हैं, कन्यामूल्य का प्रचालन है। एक साथ एक पुरूष और एक स्त्री को साथ रहने की सामाजिक मान्यता प्राप्त है। बांझपन बीमारी इत्यादि की स्थिति में दो पत्नियाँ रखने का प्रावधान है पति अपने विवाहित एंव विवाहिता अपने पति के अतिरिक्त दूसरे से यौन सम्बंध स्थापित करते हैं। यही नहीं विवाहित पुरूष दूसरों के विवाहित के साथ पलायन भी कर सकतें हैं।

विवाह जन्म एंव रक्त संबंध दोनों ही प्रकार की नातेदारी को समाज में उच्च स्थान दिया जाता है, दोनों में ही भावनात्मक संबंध देखे गए है। नातेदारी के आधार पर कुछ निषेध भी है जैसे – दामाद के आगे सास सिर खुला नहीं रखती, बड़ा भाई एंव छोटे भाई की पत्नी एक –दूसरे को स्पर्श नहीं करते, किसी की मृत्यु हो जाने पर देवर भाभी, जीजी साली विवाह का भी प्रचलन है।

अर्थव्यवस्था किसी भी समाज की रीढ की हडडी होती है। विभिन्न आर्थिक कियाओं के माध्यम से वह भोजन के द्वारा ऊर्जा प्राप्त करता है। कोरवा जाति की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से जंगल पर आधारित है। शिकार, कंदमूल, विभिन्न प्रकार के वनोपज (करंज, महुआ, चिरौजी, सखुआ, इत्यादि) एकत्रित कर जिवन यापन करना इनका मुख्य पेशा है। महिलाएं दोना पत्तल बना कर बेचती है। पुरूष वृक्षों के छाल से रस्सी बनाते हैं। परंतु आज वन अधिनियम बदलें हैं ये वन पर अपना अधिकार समझते थे पर आज ऐसा नहीं है। परिणामतः वर्तमान समय के साथ सामंजस्य स्थापित करने में इन्हें कठिनाई हो रही है। खुडिया रानी, सिगीर देव, महादेव पार्वती पूर्वजों की पूजा इत्यादि महत्वपूर्ण है क्योंकि ये शिव – पार्वती के वंशज मानते हैं। अर्थात उनकी पूजा आवश्य करते है। इसके अतिरिक्त शिकारी देवता पूवजों की पूजा अति महत्वपूर्ण है। पारंपरिक पूजन विधि में मुर्गे, मुर्गी, धुवन, चावल सखुआ के पत्ते प्रयोग में लाए जाते हैं। पूजा के पवित्र स्थान घर के भीतर वैसे जगह पर होता है जहां अन्य लोगों का आना जाना वर्जित है। इसी जगह पर पूर्वज स्थापित किए गए होते हैं। इसके अतिरिक्त घर के बाहर अर्थात गांव के स्तर पर सरना नामक स्थान पर इनके सामूहिक पूजा होते है। विशेष अवसरों पर यहाँ पूजा कि जाती है। ये जादू टोना पर अत्याधिक विश्वास करते हैं। चिकित्सा झाड–फूँक के माध्यम से किया जाती है।

राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत पारंपारिक व्यवस्था होती है। इनके आपसी झगड़े ग्राम प्रधान, बाइगा की सहायता से सुलझाया जाता है। मुख्य झगड़े छोटी–मोटी चोरी, विवाह, आदि से

Rose Minj

संबन्धित होते है। जैसे– किसी की पत्नी को कोई भगा कर ले जाता है या विवाह पूर्व किसी लड़की का गर्भवती हो जाना प्रमुख रूप से देखने को मिलता है।

ये प्रोटो ऑस्ट्रलॉइड प्रजाति समुह वर्ग के अंतर्गत आते हैं। तथा इनकी भाषा ऑट्रोएशयाटिक भाषा समूह के अंतर्गत मुंडा शाखा के अंतर्गत आती है इनकी भाषा कोरवाई के नाम से जानी जाती है जो मुंडारी से मिलती जुलती है।

प्रचीन काल में कुछ बिकसित देशों में भारत भी सम्मिलित था। सिन्धु घाटी की सभ्यता इसका प्रमाण है। ईसापूर्व चौथी शताब्दी में मौर्यकाल के समय कौटिल्य के अर्थशास्त्र विश्व भर में आज भी प्रसंगिक है। परन्तु आज दुर्भाग्यवश (विदेशी आकमणों के कारण) वैसी स्थिति नहीं है।

ब्रिटिश कॉलोतियल पॉवर की अवधि में ब्रिटिश सरकार ने **buchmann** की नियुक्ति बंगाल में की थी – जिन्होंने यहाँ के लोंगों की कमजोरी का आकलन कर ब्रिटिश सरकार ने लगभग 150 वर्षो तक भारत में शासन किया।

अतः सीधे अर्थो में इन्हें सम्मुनत करना है तो इनकी समाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करता आवाश्यक होगा।

पूर्व में किए गए अध्ययन :–

डाल्टन, रिजले कुक, रसेल, टर्नर इत्यादि विद्धानों ने कोरवा जन–जाति का संक्षिप्त अध्ययन किया है।

(1) डाल्टन ने 1872 में "डिस्कीपटीव इथेनोलॉजी ऑफ बंगाल" नामक अपनी पुस्तक में इन्हें कालेरियन ट्राइब कहा।

(2) एस. एस सरकार ने (1949) ABO रक्त समूह का अध्ययन किया।

(3) ए. एन. सन्डवार ने (1976) में कोरवा जन–जाति का आर्थिक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

(4) शरद चन्द्र रॉय (1912) मुण्डा एंड देयर कंट्री में मुण्डा जनजाति के लगभग सभी पक्षों यथा सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक शासन व्यवस्था, उत्तराधिकार के नियम इत्यादि का उल्लेख किया है।

(5) डॉ सत्यप्रकाश गुप्ता 1976 ने ASUR में असुर जन–जाति के संदर्भ में उनका एतिहासिक परिपेक्ष्य, जनगणना तथा उनके शारीरिक पक्ष – जीवन चक, रक्त समूह तथा उनपर मानवमित्ति का प्रयोग किया है।

(6) डी. एन मजुमदार एंव टी. एन. मदन (1985) सामाजिक मानवशास्त्र परिचय नामक अपनी पुस्तक में जनजातियों के बीच प्रचलित धर्म, और जादू, कला, आर्थिक संगठन, कानुन और न्याय जनजातीय समाज में स्त्रीयों की परिस्थिति, टोटमवाद, युवागृह इत्यादि का जिक किया है।

Rose Minj

(7) प्रकाश चन्द्र उरांव लैंड एंड पीपल ऑफ झारखंड (2003) – में झारखंड की प्रकृतिक पृष्ठभूमि यथा जलवायु, बनस्पति, खनिज सम्पदा का विवरण देते हुए झारखंड की 32 जनजातियों का जिक किया है। कोरवा जनजाति की भौतिक सामग्री, गोत्र, विवाह, नातेदारी, जन्म संस्कार, अर्थव्यवस्था, धर्म, राजनैतिक व्यवस्था इत्यादि का जिक किया है।

(8) एल. पी. विद्यार्थी (बी. के. राय) द ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया (1976) – में जनजातियों के आर्थिक प्रणाली, सामाजिक संगठन, राजनैतिक जीवन, धार्मिक जीवन, लोक–कला एंव संस्कृति जनजातिय गाँव इत्यादि का जिक किया है।

समस्या की कथन

उपरोक्त पूर्व के शोध अध्ययनों के अध्ययन तथा सामाजिक अवलोकनों के आधार पर हम देखते है कि, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश भर में 12 पंचवर्षीय योजनाएं पूरी हो चुकी है तथा 2014 के बाद से नीति आयोग के द्वारा अनगिनत योजनाएं जनजातिय क्षेत्र के लोगों के विकास को लेकर कार्यन्वित की गयी। इसके बाद भी कुछ आदिम जनजातियों का अपेक्षित विकास नहीं हो सका। इन आदिम जनजातियों में से एक कोरवा जनजाति है।

आदिम जन–जाति कोरवा का समेकित अध्ययन मे कोरवा जन–जाति का शोध उद्धेश्य

किसी भी समाज की वास्तविक स्थिति को जानने के लिए उनकी संसकृति को समझना परम आवश्यक है।

ऐसे अनेको प्रयास किए गए है।

जैसे :–

1 ग्लूकमेन – अस्ट्रेलियन अबोरजीनल्स

2 इभान्स प्रीर्चड – नूअर

3 बी. मैलीनोस्की – ट्रोवियन्डा आइसलैण्ड

4 आर. सी. ब्राउन – अंदमान आइसलैण्डस ने अध्ययन किया है।

कोरवा इसी प्रकार की आदिम जन–जाति है जिनकी स्थिति दिन प्रति दिन नाजूक होती जा रही है। इनकी जिन्दगी का दिनचर्या शराब से प्रारंभ होकर शराब से ही अंत होती है। कोरवा जन–जाति में जन्मदर एंव मृत्युदर दोनों अधिक है। आर्थिक स्थिति दिनोदिन खराब होती जा रही है। प्राकृतिक /अलौकिक शक्तियों पर विश्वास प्रगाढ़ता की ओर बढ़ रही है। परिणामत: रूढीवादी विचार पनपते रहें हैं। जो डायनप्रथा, जादू–टोना की ओर समाज को ले जा रहा है।

Rose Minj

उपरोक्त शोध अध्ययनों के माध्यम से आदिम जनजाति कोरवा के सामाजिक, आर्थिक, जनांकिकीय संघटकों, धार्मिक एंव सांस्कृतिक मूल्यों का वर्तमान समय में स्थिति के साथ–साथ इस जनजाति के समक्ष आने वाली समस्याओं को उजागर करना है।

उपयुक्त शोध समस्या के उद्धेश्य निम्नांकित है :–

(1) आदिम जनजाति कोरवा के सामाजिक तथा आर्थिक पहलूओं का अध्ययन करना।

(2) आदिम जनजाति कोरवा के जनांकिकीय संघटकों का अध्ययन करना।

(3) आदिम जनजाति कोरवा के धार्मिक एंव सांस्कृतिक मूल्यों का वर्तमान समय में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

(4) आदिम जनजाति कोरवा के विभिन्न समस्याओं का पता लगाना।

परिकल्पना

(1) स्वतंत्रता प्राप्ति (भारत) के (70 वषों) सात दशक के पश्चात भी कोरवा आदिम जनजाति की सामाजिक आर्थिक स्थिति धीरे–धीरे परिवर्तन हो रही है।

(2) भारतीय संविधान के द्वारा अनुसूचित जनजाति / जाति की सुरक्षा एंव विकास हेतु विभिन्न धाराओं / उपबन्धों के माध्यम से विभिन्न प्रावधान किए गए हैं जिसका लाभ बहुसंख्यक जनजाति को ही प्राप्त हो रहे है अन्य आदिम जनजाति की तुलना में कोरवा जनजाति इनका लाभ नहीं ले पा रहें है।

(3) शिक्षा किसी जनजाति की सामाजिक आर्थिक स्थिति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

(4) कोरवा आदिम जनजाति की मुख्य अर्थव्यवस्था शिकार एंव खाद्य संग्रहण पर आधारित है परन्तु अन्य कोई उत्पादन निर्वाह प्रौद्योगिकी नही होने के कारण उनको सामाजिक आर्थिक स्थिति यथावत बनी हुई है।

(5) जीवन निर्वाह तानीक में परिवर्तन सामाजिक आर्थिक स्थिति एंव विश्वास प्रणाली को परिवर्तित कर सकती है।

Rose Minj

शोध प्रारूप तथा विधि :-

उपरोक्त वणिति शोध कथन या समस्या के अध्ययन एंव आंकड़ों के संग्रहन एंव संकल्न के लिए सर्वेक्षन विधि का प्रयोग किया जाएगा। आंकड़ों का संकलन के लिए प्राथमिक तथा द्विवियक आंकड़ों के श्रोतों का प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन – क्षेत्र

(अ) झारखंड राज्य के सिमडेगा जिला में अंतर्गत में निवासित आदिम जनजाति कोरवा पर केंद्रित होगा।

(ब) जहाँ परिवारों की संख्या 140 है और इनकी कुल जनसंख्या 611 है।

आंकड़ों के श्रोत एंव उपकरण :-

आंकड़ों के संकलन के लिए शोधकर्त्ता के द्वारा प्राथमिक एंव द्वितीयक आंकड़ों के स्त्रोतों का प्रयोग किया जायेगा जो शोध उदेश्य की अवश्यकता को परिपूर्ण करती है। साथ ही साथ शोध उदेश्य को ध्यान में रखते हुए उदेश्य से संबंधित साक्षात्कार अवलोकन प्रयोग लाए जाएंगे।

आंकडों का विश्लेषण :-

शोधकर्ता के द्वारा शोध उदेश्य की परिपुष्टि के लिए प्राप्त आंकडों का तथा संकलित आंकडों का विश्लेषण सांख्यिकी विधियों के माध्यम से किया जाएगा।

शोध अध्ययन का महत्व :-

जनजातिय विकास को लेकर भारत सरकार के द्वारा विभिन्न जनजातिय क्षेत्र विकास से संबंधित योजनाएं लाए गए। इन योजनाओं के कियान्नवय से भारत के बहुल जनजातियों विकास संभव हो पाया है। वरन आज भी इन जनजातियों की एक समुह में ही झारखण्ड तथा छतीसगढ के क्षेत्रों में निवासित आदिम जनजाति कारवा है। जो आज भी आजादी के70दशकों के बाद खुद को उन पहाडो कंदराओं एंव पूराने रिति रिवाजो एंव संस्कृति को सुदुर क्षेत्र में रहकर जी रहें है तथा आज भी उनका सामाजिक आर्थिकि शैक्षिक विकास मुख्य धारा में निवासित जनजातियों की तुलना अवरूध है। उपरोक्त शोध अध्ययन ना र्सिफ आदिम जनजातिय कोरवा के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करेगा। यह जनजातियों क्षेत्रों में चलाए जाने वाले विभिन्न प्रयोजनाओं के उचित कियान्वन से संबंधित समस्याओं का अध्ययन कर योजना निर्माण में लगे योजना

Rose Minj

निर्माणकर्ता को एक नई दिशा प्रदान करेगा जिससे इन कार्यकम को सतही स्तर पर लाया जा सकेगा।

प्रासंगिकता :–

उपर्युक्त शोध समस्या वर्तमान समाज की सामाजिक आर्थिक विकास की उन पहलुओं का अध्ययन कर समाज के उन समुहो के विकास की बात करता है। जो किसी कारण वश विकास की मुख्यधारा से खुद को जोड पाए है। साथ ही इन समुहो के विकास ना हो पाने की जमीनी स्तर पर समस्याओं का अध्ययन कर उसके संमाधान के प्रयासो को इंगित करेगा।

वर्तमान ज्ञान में इसका योगदान :–

प्रस्तावित शोध अध्ययन वर्तमान ज्ञान की उस अनधुए पहलूओं के अध्ययन में मदद करेगा जो सुदूर क्षेत्रो में निवासिंत लोगो तक पहुंच नही पायी है। साथ ही यह विकास के उस मॉडल की पहुंच को सुनिशचित करने के संभावित उपायों की बात करेगा ।

भविष्य के कार्य :–

उपर्युक्त शोध अध्ययन भविष्य में शोधकर्ता के जनजातियों के विकास के अध्ययन से संबंधित अध्ययन के साथ –साथ सुदूर क्षेत्र में निवासित विभिन्न आदिम जनजाति के विकास का अध्ययन तथा उनके सामाजिक,आर्थिक,शैक्षिक एंव जनांकीकीय संरचना से संबंधित अध्ययनों की ओर प्रेरित करेगा ।

Rose Minj

अध्यायों की रूप रेखा :—

अध्याय 01 भुमिका

अध्याय 02 पारिस्थितकी एंव संस्कृति

जिला एंव क्षेत्र का परिचय

यातायात / चौहदी

वहां के लोग

जलवायु

पर्यावरणीय दशाएं एवं संस्कृति

अध्याय 03 जनांकीय संरचना

अध्याय 04 जीवन चक

गर्भ धारा

जन्म

विवाह

मृत्यु

अध्याय 05 सामाजिक संरचना

परिवार

गोत्र

वंश

सामाजिक नियम

अध्याय 06 आर्थिक संगठन

अध्याय 07 राजनैतिक संगठन

अध्याय 08 धार्मिक संगठन

अध्याय 09 कोरवा संस्कृति की गतिशीलता

अध्याय 10 उपसंहार एंव मंतव्य

संदर्भ ग्रन्थों की सूचि

Rose Minj

परिशिष्ट मानचित्र

वैयक्तिक का अध्ययन

स्थानीय शब्दावाली

फोटोग्राफस

Rose Minj

संदर्भ ग्रन्थों की सूची :—

1. उरॉव डॉ प्रकाश चन्द्र (2003) — "लैंड एन्ड पिपल ऑफ झारखंड" झारखंड ट्राइबल, वेलफेयर डिपारटमेन्ट, govt of Jharkhand मोराहबादी रांची।
2. गुप्ता डॉ सत्य प्रकाश (1976) — "द असुर" बिहार ट्राइबल रिर्सच इन्सीटिच्युटस रांची।
3. रॉय चन्द्र शरत (1912) "मुण्डा एण्ड देयर कंट्री" काउन पब्लिकेशन छोटानागपुर इंडिया।
4. श्रीनिवास एम. एन. (1955) "इंडियाज विलेज बॉम्बे"।
5. विद्यार्थी एल. पी. (1961) "भारत के आदिवासी पटना" कॉलेज सेन्टर।
6. सच्चिदानन्द (1964) "कल्चर चेंज ट्राइबल बिहार" बुकलैंड प्रा. लि. कोलकत्ता।
7. विद्यार्थी एल. पी. एंव विनय कुमार रॉय (1985) " दि ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया" नई दिल्ली कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी।
8. मजुमदार डी. एन. (1986) "एन इन्ट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपॉलॉजी " नोयडा, मयूर पेपरबैक्स कम्पनी।
9. मजुमदार डी.एन. (1950) "दि अफेयर्स ऑफ ए ट्राइब ए स्टडी इन ट्राइबल डायनामिक्स "लखनउ युनिवर्सल प्रकाशन ।
10. विमला चरण (2001) "झारखंड की जनजातियां" रावत पब्लिकेशन न्यू दिल्ली इंडिया।

Rose Minj

Time-Frame

Library Work	3 Months
Field Work	8 Months
Preparation of draft	3 Months
After Correction Revision-to field	2 Months
Preparation of Draft	3 Months
After Correction preparation of final draft	4 Months
List/Typing/Binding/Submission	10 Months

Rose Minj